गुलामी की कहानी

सारा कोर्टौल्ड

डिज़ाइन: कैरेन टॉमलिन्स

गुलामी की कहानी

सारा कोर्टौल्ड

डिज़ाइन: कैरेन टॉमलिन्स

विषय-वस्तु

अध्याय 1 पहले गुलाम

अध्याय 2 अफ्रीका में

अध्याय 3 महासागर के पार

अध्याय 4 एक गुलाम की यात्रा

अध्याय 5 बागान जीवन

अध्याय 6 महान पलायन

अध्याय 7 विद्रोह!

अध्याय 8 जंजीरों को तोड़ना

अध्याय 9 युद्ध में गुलाम

अध्याय 10 गुलामी का अंत?

यह 19वीं सदी की पेंटिंग कैरिबियन में एंटीगुआ के बागान में काम कर रहे गुलामों को दिखाती है.

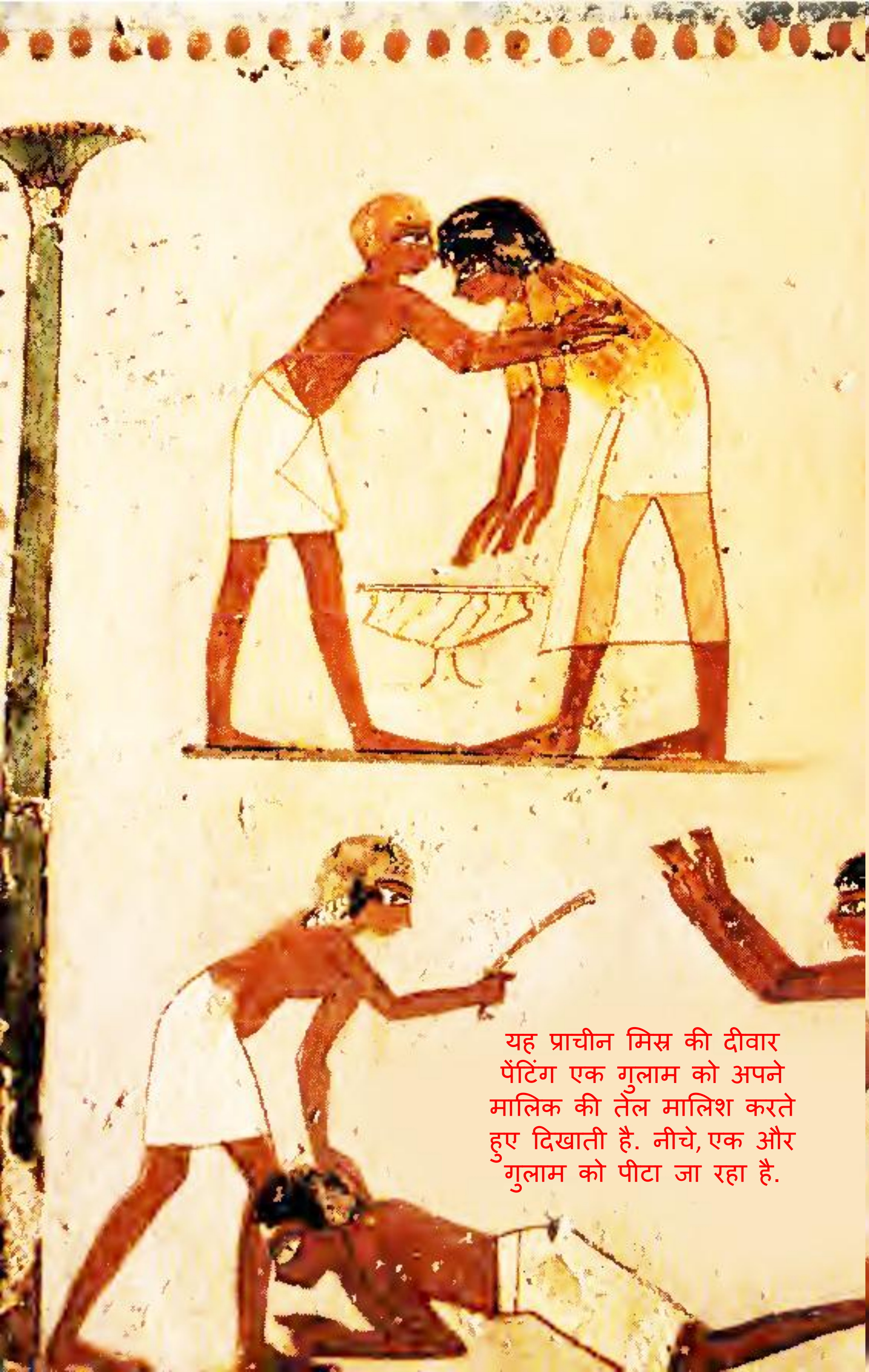

यह प्राचीन मिस्र की दीवार पेंटिंग एक गुलाम को अपने मालिक की तेल मालिश करते हुए दिखाती है. नीचे, एक और गुलाम को पीटा जा रहा है.

अध्याय 1

पहले गुलाम

प्राचीन समय में, दुनिया भर में ऐसे बहुत से लोग थे जिन्हें कोई आज़ादी हासिल नहीं थी. सुबह से शाम तक काम करने के लिए मजबूर, इन लोगों को खाने के लिए झूठन दी जाती थी और उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जाता था. उन्हें मवेशियों की तरह खरीदा या बेचा जा सकता था और उन्हें उनके काम के लिए कभी भुगतान नहीं मिलता था. अगर वे पर्याप्त मेहनत नहीं करते, तो उनके मालिक उन्हें पीट सकते थे.

इन लोगों को गुलाम के रूप में जाना जाता था और उनकी कहानी मानव इतिहास की सबसे बदसूरत कहानियों में से एक है.

कई बहादुर गुलामों ने भागने की कोशिश की, लेकिन अगर वे पकड़े गए, तो उन्हें कड़ी सज़ा दी गई. कुछ मालिकों ने अपने गुलामों पर टैटू या तपते लोहे से निशान दागे जाते थे, जो उनकी त्वचा को गहराई तक जला देते थे. फिर गुलामों के लिए बिना पकड़े भागना लगभग असंभव था.

सभी तरह के लोग गुलाम बन सकते थे. कुछ को अपराध की सज़ा के तौर पर गुलामी में धकेला गया, दूसरों ने अपने बच्चों को गुलामी में बेच दिया जब वे अपने बच्चों की देखभाल करने में असमर्थ थे.

युद्धों में पकड़े जाने के बाद कई लोग गुलाम बन गए. प्राचीन मिस्र में, एक व्यक्ति ने बताया कि कैसे हमलावर सैनिक उसके घर में घुस आए, उसकी पत्नी और बच्चे को पकड़ लिया और उनका अपहरण कर लिया, "मैंने सैनिकों से लड़ने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने मुझ पर हमला किया," उसने लिखा, "वे मेरा परिवार ले गए."

महिला दासों को मुख्य रूप से घर का काम करने के लिए मजबूर किया जाता था, जबकि पुरुषों को शारीरिक रूप से सबसे अधिक थका देने वाले काम करने पड़ते थे.

प्राचीन ग्रीस में कुछ सबसे बदकिस्मत दास खदानों में काम करते थे, सुरंगों में खुदाई करते थे जिनसे ज़हरीला धुआँ निकलता था. लेकिन विश्वसनीय पदों पर कुशल दास भी थे जिनका बहुत सम्मान किया जाता था. प्राचीन यूनानियों की सेना में भी दास थे, जबकि प्राचीन रोम के कुछ दास डॉक्टर के रूप में काम करते थे.

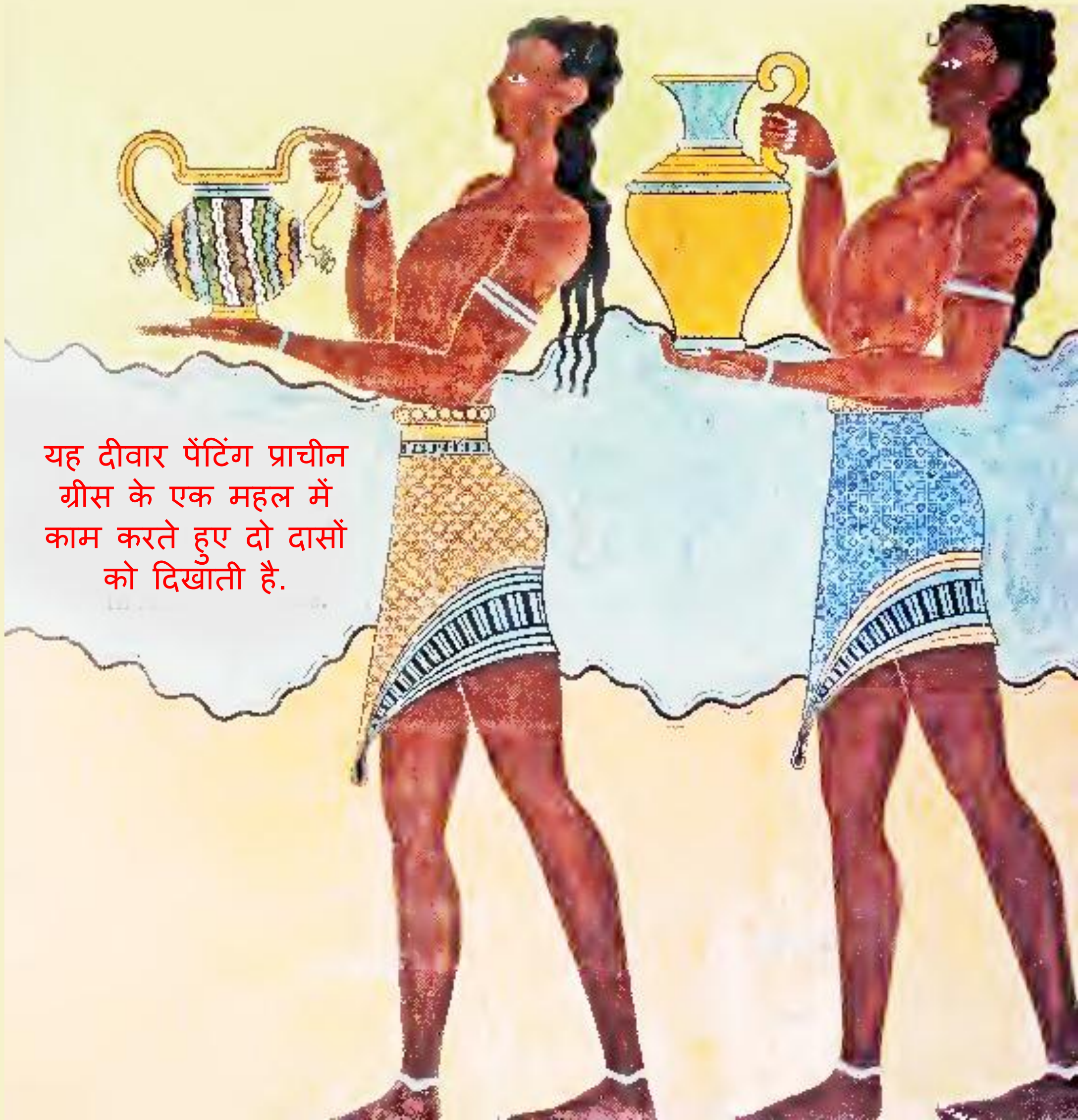

यह दीवार पेंटिंग प्राचीन ग्रीस के एक महल में काम करते हुए दो दासों को दिखाती है.

रोमनों ने दासों का इस्तेमाल मनोरंजन के लिए भी किया, उन्हें जयकार करने वाली भीड़ के सामने एक-दूसरे से लड़ने के लिए प्रशिक्षित किया जाता था. ग्लेडिएटर के रूप में जाने जाने वाले इन दासों को अक्सर अपनी मौत तक लड़ना पड़ता था.

कभी-कभी स्वामी अपने दासों को वर्षों की वफ़ादार सेवा के बाद मुक्त कर देते थे. लेकिन कम कुशल दासों के लिए, स्वतंत्रता की बहुत कम उम्मीद होती थी. विद्रोह करने वालों को क्रूरता से दंडित किया जाता था. एक रोमन नागरिक, वेडियस पोलियो ने अपने अवज्ञाकारी दास को अपनी पालतू मछलियों को खिला दिया.

कुछ लोगों ने गुलामी का विरोध किया, लेकिन रोमन लोगों ने उसे कभी खत्म नहीं करा - गुलामी उनके लिए बहुत उपयोगी थी.

यह बैज उस रोमन दास ने पहना था जिसने भागने की कोशिश की थी. शिलालेख में लिखा है! "अगर मैं भागूं तो मुझे पकड़ो."

अध्याय 2

अफ्रीका में

मध्य युग के दौरान, दासता पूरी दुनिया में मौजूद रही. 9वीं शताब्दी से, स्कैंडिनेविया के भयंकर समुद्री योद्धा, जिन्हें वाइकिंग्स के रूप में जाना जाता है, पूरे यूरोप में नौकायन करते थे. जब वे ब्रिटेन और आयरलैंड के तटों पर पहुंचते, तो उनके हमले और तेज और क्रूर होते थे.

वे अपने जहाजों को समुद्र तटों पर ले गए, फिर किनारे पर भागे और गांवों पर छापा मारा, और पुरुषों और महिलाओं को गुलामों के रूप में बेचने के लिए पकड़ लिया. वे अपने कैदियों को आइसलैंड तक ले गए, और उन्हें शराब, रेशम, चांदी और सोने के बदले में बेचा.

13वीं शताब्दी से, पश्चिमी यूरोप में दास प्रथा समाप्त होने लगी. नए कानून पारित किए गए, जिससे दासों को "सर्फ" बनाया गया. "सर्फ" स्वतंत्र नागरिक नहीं थे - उन्हें अपने स्थानीय स्वामी के लिए जीवन भर काम करना पड़ता था. लेकिन, गुलामों के विपरीत, "सर्फ" को खरीदा या बेचा नहीं जा सकता था.

इस बीच, एक नया धर्म, इस्लाम, मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में फैल गया था. इसके अनुयायी, जिन्हें मुसलमान कहा जाता था, ने नई भूमि पर विजय प्राप्त करने के लिए कई लड़ाइयाँ लड़ीं.

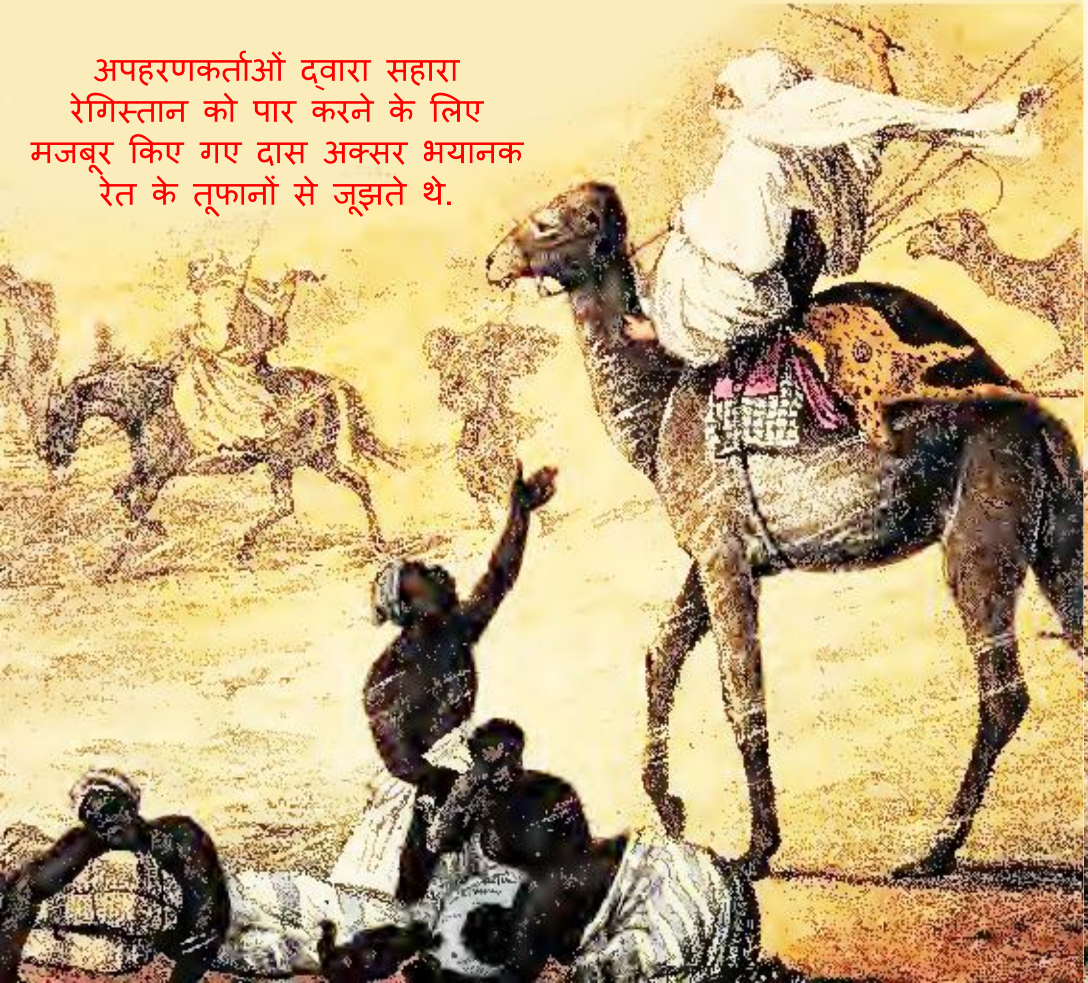

अपहरणकर्ताओं द्वारा सहारा रेगिस्तान को पार करने के लिए मजबूर किए गए दास अक्सर भयानक रेत के तूफानों से जूझते थे.

मुसलमान अपने ही लोगों को गुलाम बनाने में विश्वास नहीं करते थे. इसलिए, वे दासों को खोजने के लिए अफ्रीका में बहुत दूर तक गए और उन्हें तपते सहारा रेगिस्तान से होकर वापस लाए. 15वीं शताब्दी तक, हर साल हज़ारों अफ़्रीकी अपने घरों से अगवा किए जा रहे थे.

लेकिन इससे भी बुरा होने वाला था. यूरोपीय लोग एक नया दास व्यापार शुरू करने वाले थे, जिसका पैमाना पहले कभी नहीं देखा गया था.

यह नक्शा सहारा से मध्य पूर्व में दास मार्गों को दिखाता है.

यह मानचित्र कोलंबस के अटलांटिक महासागर से कैरेबियन तक के मार्ग को दर्शाता है.

अध्याय 3

महासागर के पार

1492 में, क्रिस्टोफर कोलंबस नामक एक खोजकर्ता को स्पेन के राजा ने दुनिया भर की यात्रा करने के लिए भेजा. यूरोप में दूर स्थित सोने से भरे देशों की कहानियाँ पहुँच चुकी थीं, और कोलंबस उन्हें खोजने के लिए दृढ़ था.

वह अटलांटिक के पार चला गया, और कई हफ़्तों के बाद, उसने कैरेबियन के द्वीपों को खोजा. कोलंबस ने लिखा कि स्थानीय लोग "सज्जन लोग थे, जो बिना हत्या या चोरी किए रहते थे". कोलंबस ने कई द्वीपों पर स्पेनिश बस्तियाँ स्थापित कीं.

जल्द ही स्पेनियों ने वहाँ विशाल गन्ने के खेत लगाए, जिन्हें बागान कहा जाता था, और स्थानीय लोगों को दासों के रूप में खेतों पर काम करने के लिए मजबूर किया. कोलंबस के साथ क्रूरता से पेश आया गया, और कई लोग मारे गए.

सालों बाद, एक स्पेनिश भिक्षु, लास कासस ने बागानों का दौरा किया, और उसने जो देखा उससे वह भयभीत हो गया. उसने स्पेन के राजा से स्वतंत्र लोगों को गुलाम बनाने के बजाय अफ्रीकी दासों का उपयोग करने की विनती की. उसने यह अधिक न्यायपूर्ण लगा, क्योंकि कुछ अफ्रीकी समाजों में दास प्रथा पहले से ही मौजूद थी.

कैरेबियन आगमन पर स्थानीय लोग कोलंबस का स्वागत करते हुए.

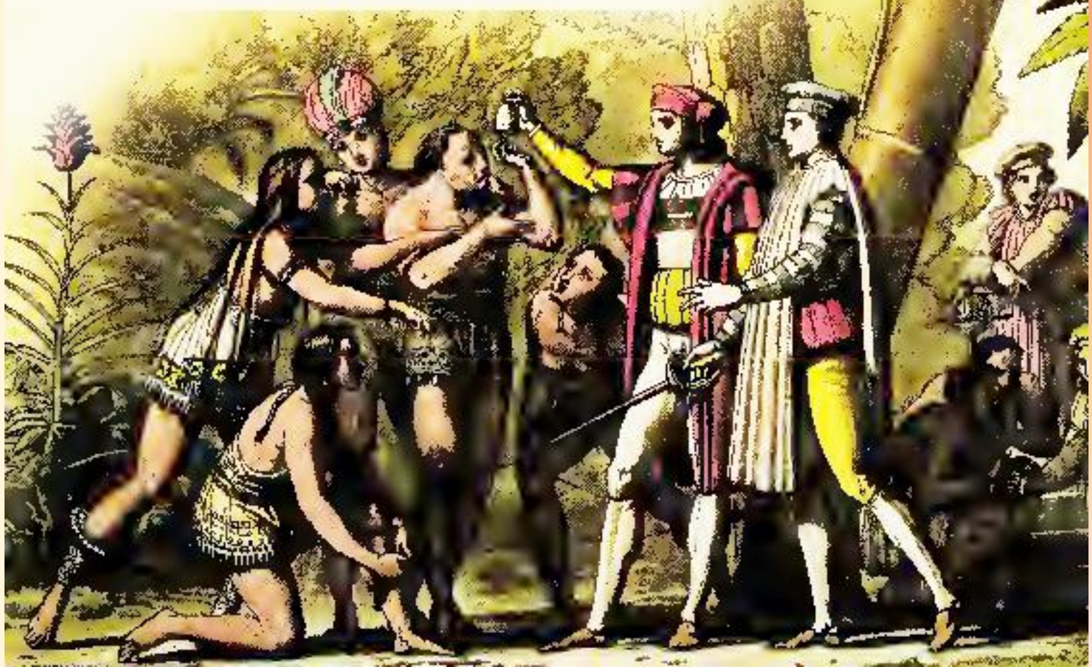

जल्द ही पश्चिम अफ्रीका से स्पेनिश जहाज आए, जो पुरुषों और महिलाओं से भरे हुए थे. उन्हें जल्दी से खेतों में काम करने के लिए तैयार किया गया. गन्ने की कटाई कर उसकी फसल को स्पेन भेजा गया. स्पेनियों ने अफ्रीकियों के साथ क्रूरता से व्यवहार किया. बहुत से लोग मारे गए, लेकिन स्पेनियों ने उनकी जगह अन्य लोगों को भेजा.

यूरोप में, लोग पेस्ट्री और मीठे पेय पसंद करते थे, और वे कैरेबियाई चीनी के लिए उच्च मूल्य चुकाते थे. अगले सौ वर्षों में, कैरेबियाई बागानों ने दास मालिकों और व्यापारियों को बहुत अमीर बना दिया था.

जल्द ही अन्य यूरोपीय देश, अटलांटिक महासागर के पार भूमि पर कब्जा करने के लिए दौड़ पड़े. पूर्व स्पेनिश लोगों की तरह, वे भी अफ्रीका से दासों को अपने बागानों में काम करने के लिए लाए, और उन्होंने गन्ने, तंबाकू और कॉफी की खेती की.

कुल मिलाकर, 11 मिलियन से अधिक अफ्रीकियों को गुलामी के जीवन के लिए समुद्र के पार ले जाया गया. यह मानव इतिहास की सबसे क्रूर घटनाओं में से एक बन गई.

19वीं सदी की यह पेंटिंग कैरिबियन के एंटीगुआ में एक गन्ने के बागान में काम करते हुए पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को दिखाती है.

लंबी यात्राओं के दौरान दासों को इस तरह एक साथ जंजीरों में बांधा जाता था.

अध्याय 4

एक दास की यात्रा

यूरोप से पश्चिम अफ्रीका और फिर अमेरिका और कैरिबियन तक का मार्ग "दास त्रिकोण" के रूप में जाना जाता है. 18वीं सदी के दौरान, लिवरपूल, लिस्बन और सेविले जैसे यूरोपीय बंदरगाहों से हर साल हज़ारों जहाज़ “दास पकड़ने” की यात्रा पर निकलते थे.

दासों में से ओटोबाह कुगोआनो नाम का एक लड़का था, जिसने बाद में अपनी कहानी लिखी. वह मुश्किल से बारह साल का था जब हमलावरों ने उसे उसके पश्चिम अफ़्रीकी गाँव से अगवा कर लिया था.

ओटोबाह अपने दोस्तों के साथ जंगल में खेल रहा था, जब अचानक उसे पीछे से पकड़ लिया गया और किसी के कंधे पर फेंक दिया गया. उसके अपहरणकर्ता पेड़ों के बीच से भाग निकले. जब वे रुके, तो उन्होंने ओटोबाह को मिट्टी पर पटक दिया. उसने देखा कि उसके ऊपर दो बड़े आदमी खड़े थे.

यह नक्शा दास व्यापारियों के मार्ग को दर्शाता है, यूरोप से अफ्रीका, कैरिबियन के पार, और वापस यूरोप. इसे "दास त्रिकोण" के रूप में जाना जाता था.

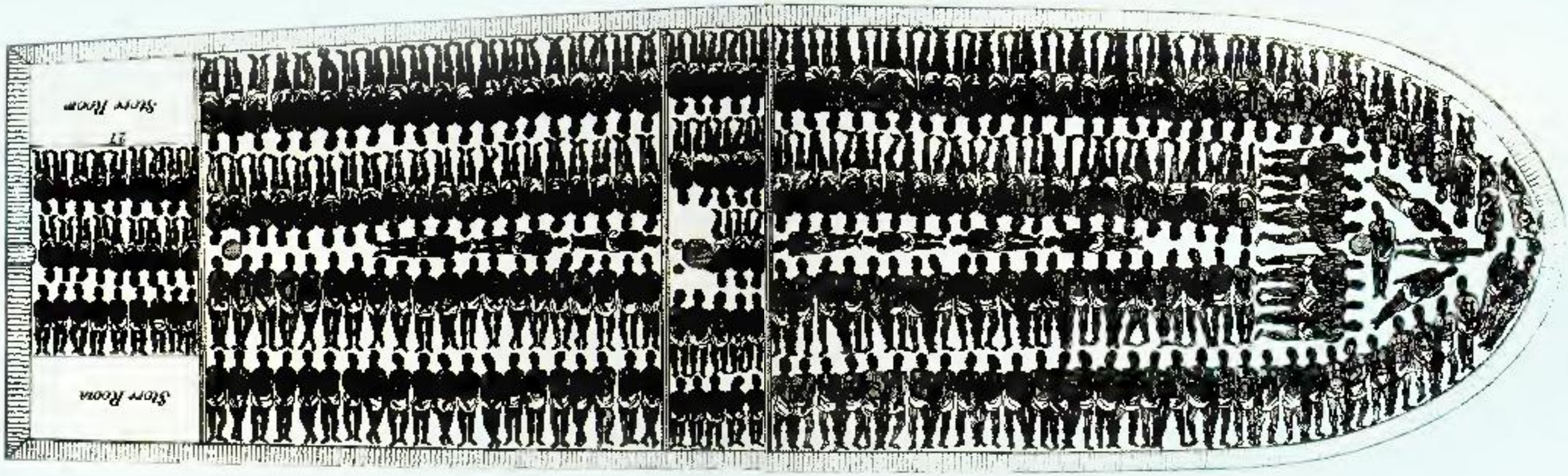

दास व्यापारी द्वारा बनाई गई यह योजना दर्शाती है कि दासों को एक "दास जहाज" के होल्ड में कितनी कसकर पैक किया जाता था. प्रत्येक दास के पास लेटने के लिए केवल एक ताबूत जितनी जगह ही होती थी.

एक ने अपने दोस्त को उसके बालों से बुरी तरह से पकड़ रखा था, दूसरे ने ओटोबा की गर्दन पर एक चमकती हुई छुरी तान रखी थी. पकड़ने वालों ने जल्दी से बच्चों के हाथ बाँध दिए और उन्हें जंगल के रास्ते ले गए. वे महीनों तक चलते रहे, आखिरकार, वे समुद्र तक पहुँचे. बच्चों को अलग कर दिया गया, और ओटोबा को एक गंदी कालकोठरी में बंद कर दिया गया. वह कई दिनों तक वहाँ अंधेरे में पड़ा रहा.

एक सुबह, एक अजीब, पीले आदमी ने उसे कोठरी से बाहर निकाल और तट पर ले गया. कुछ ही मिनटों में उसे एक बड़े लकड़ी के जहाज के डेक पर ले जाया गया. फिर उसे एक बदबूदार होल्ड में धकेल दिया गया, जहाँ सैकड़ों लोग अंधेरे में एक साथ कसकर पैक किए गए थे.

जैसे ही जहाज समुद्र में रवाना हुआ, कैदी हर लहर के साथ एक-दूसरे से टकराने लगे. जल्द ही फर्श पसीने, पेशाब और खून की परतों से ढक गया. यात्रा में दस में से एक ही कैदी ही बच पाया.

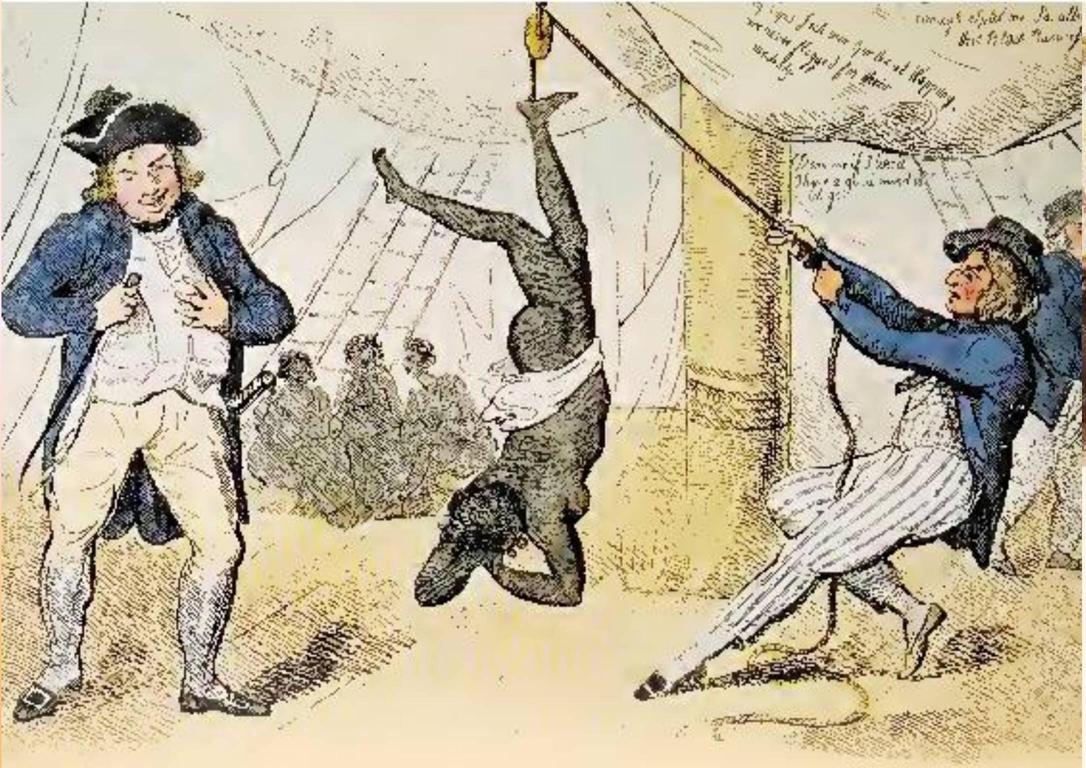

जॉर्ज क्रूइशांक नामक एक कलाकार ने यह प्रिंट बनाया, जिसमें एक गुलाम जहाज का कप्तान एक महिला गुलाम को सज़ा दे रहा है.

कुछ लोगों ने आज़ादी के लिए समुद्र में छलांग लगाई - पहरेदारों को चकमा देकर और बर्फीले अटलांटिक महासागर में कूदकर. उन्होंने कैदी के रूप में जीने के बजाए मरना पसंद किया. दूसरों ने गुलाम जहाज के कप्तानों को उखाड़ फेंकने की साजिश रची. लेकिन अधिकांश इसमें असफल रहे और फिर उन्हें क्रूरता से दंडित किया गया.

अध्याय 5

बागान जीवन

एक नरक जैसी यात्रा के बाद, दास महासागर के दूसरी ओर पहुँच गए. जैसे ही वे जहाज से उतरे, उन्हें नंगा कर दिया गया, नहलाया गया और उन्हें स्वस्थ दिखाने के लिए उनके शरीर पर पाम (ताड़) का तेल मला गया. फिर उत्सुक खरीदारों की भीड़ उनके चारों ओर उमड़ पड़ी, उन्हें इस तरह से छेड़ा गया जैसे वे बाजार में बिकाऊ जानवर हों.

खरीदार देखते हैं कि गुलामों का जहाज आ रहा है और फिर गुलामों को किनारे पर ले जाया जाता है.

फिर नीलामी शुरू हुई. जैसे ही प्रत्येक गुलाम स्टैंड पर खड़ा हुआ, उसके बाकी जीवन का फैसला कुछ ही क्षणों में हो गया.

नीलामी अक्सर दुखद विदाई के दृश्य हुआ करती थी. 1851 में, एक दर्शक ने संयुक्त राज्य अमेरिका के सेंट लुइस में एक गुलाम नीलामी का वर्णन किया. जब एक युवक को बेचा गया, तो वह अपने नए मालिक के पास गया और उससे अपनी पत्नी को भी खरीदने की विनती की, "मुझे वह नहीं चाहिए," आदमी ने झट से कहा. "लेकिन अगर वह सस्ते में मिली तो मैं उसे खरीद लूँगा."

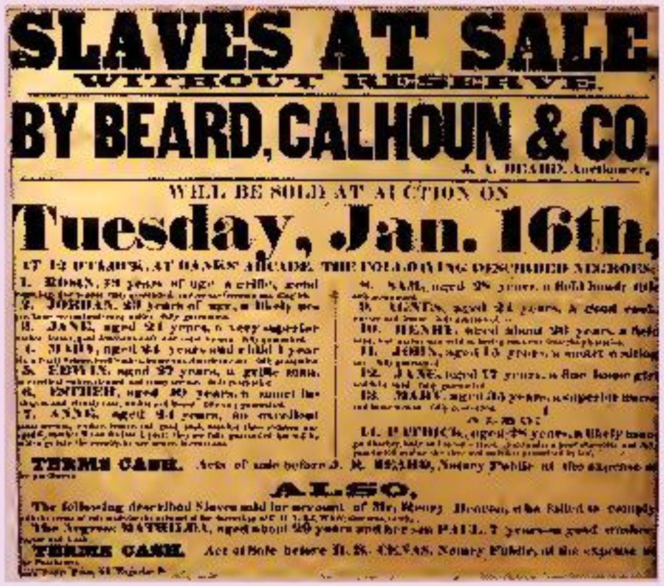

SLAVES AT SALE

WITHOUT RESERVE.

BY BEARD, CALHOUN & CO.

WILL BE SOLD AT AUCTION ON

Tuesday, Jan. 16th,

TERMS CASH.

ALSO,

TERMS CASH.

यह पोस्टर संयुक्त राज्य अमेरिका में
2 गुलाम नीलामियों का विज्ञापन है.

जब उसके नए मालिक ने बोली लगाई, तो युवक का चेहरा चमक उठा. लेकिन जब दूसरे आदमी ने उसकी पत्नी के लिए ज़्यादा कीमत की पेशकश की, तो उसके गालों पर आँसू बहने लगे. जल्द ही, महिला को बेच दिया गया - लेकिन उसके पति के मालिक को नहीं.

युवक अपनी पत्नी के पास भागा. "हम धरती पर अलग होने वाले हैं," उसने कहा. "मुझे उम्मीद है कि तुम मुझसे स्वर्ग में मिलने की कोशिश करोगी. मैं वहाँ तुमसे मिलने की जरूर कोशिश करूँगा."

इस पेंटिंग में, एक महिला गुलाम उस गुलाम मालिक से विनती करती है जिसने उसके पति को खरीदा है कि वह उसे और उसके बच्चे को भी खरीद ले.

ज़्यादातर गुलामों को बागानों में ले जाया जाता था, जहाँ उन्हें नियमित रूप से कोड़े मारे जाते थे और पीटा जाता था. घरों में काम करने वाले गुलामों का जीवन ज्यादा आसान था. लेकिन वे अपने मालिकों की चौकस निगाहों के नीचे रहते थे. अगर वे गलत व्यवहार करते, तो उनका कान काट दिया जाता, उन्हें कोड़े मारे जाते या यहाँ तक कि उन्हें मार भी दिया जाता.

कैरिबियन और दक्षिण अमेरिका में काम करने वालों के लिए जीवन सबसे कठिन था. वहाँ, कुछ बागान मालिकों ने विद्रोही दासों के लिए भयानक दंड का आविष्कार किया, जैसे कि उन्हें ज़िंदा दफना देना.

इस बीच, यूरोप में, वैज्ञानिक और विचारक यह सिद्धांत विकसित कर रहे थे कि अफ़्रीकी अन्य लोगों से कमतर हैं. ये नस्लवादी विचार जल्दी ही लोकप्रिय हो गए, जिससे लोग दासता को अधिक स्वीकार करने लगने.

जबकि बागान मालिकों ने अफ़्रीकी लोगों के साथ ऐसा व्यवहार किया मानो वे मूर्ख हों, तब कई दासों ने इसका फ़ायदा भी उठाया. कुछ ने खेत के जानवरों को खुला छोड़ दिया, अपने मालिकों के कपड़े खराब कर दिए, सबसे अच्छी खाने की प्लेटें तोड़ दीं - और फिर दिखावा किया कि यह वो सब एक दुर्घटना थी!

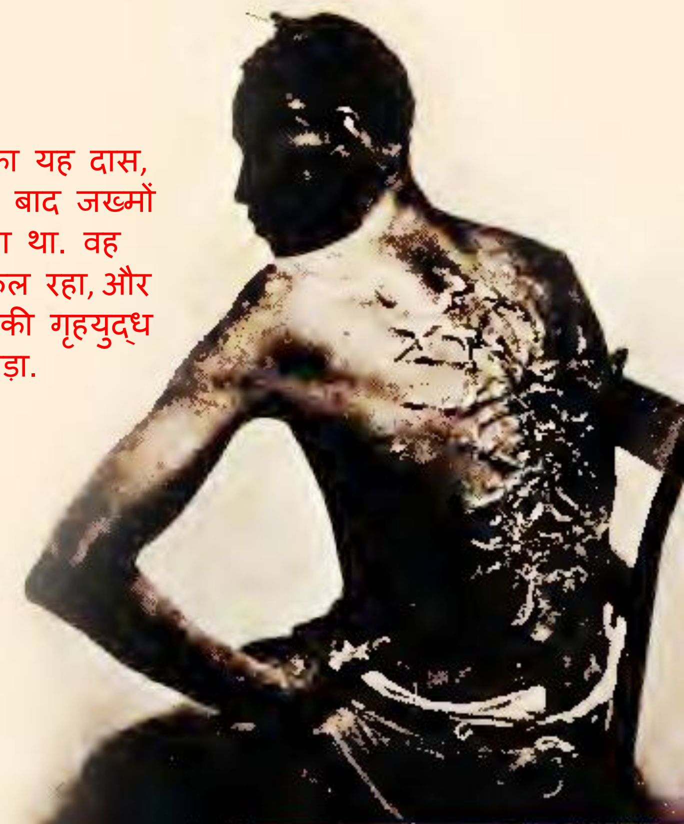

गॉर्डन नाम का यह दास, कोड़े लगने के बाद जख्मों से भरा हुआ था. वह भागने में सफल रहा, और बाद में अमेरिकी गृहयुद्ध में लड़ा.

जब दासों ने मूर्खतापूर्ण व्यवहार करना बंद कर दिया, तो उनके मालिकों को झटका लगा. जमैका के पोम्पी नामक एक दास की एक प्रसिद्ध कहानी है जिसने अपने मालिक को अकल में मात दे दी. एक दिन, उसका मालिक अपने बेडरूम में आईने के सामने खड़ा अपने नए सुंदर कपड़ों की प्रशंसा कर रहा था

"पोम्पी, मैं कैसा दिख रहा हूँ?" उसने पूछा.

"क्यों, सर, आप बहुत ताकतवर दिख रहे हैं - बिल्कुल शेर की तरह," पोम्पी ने जवाब दिया.

"बताओ, पोम्पी, तुमने शेर कहाँ देखा है?" मालिक ने पूछा.

"मैंने पिछले दिन नीचे खेत में एक शेर देखा था, मास्टर," पोम्पी ने जवाब दिया.

"पोम्पी, तुम एकदम मूर्ख हो, वह एक गधा था," मालिक ने मुस्कुराते हुए कहा,.

"क्या वो था, सर?" पोम्पी ने जवाब दिया, "ठीक है, सर, आप बिल्कुल उसके जैसे दिख रहे हैं."

गुलामों का जीवन कठिन, दर्दनाक था, लेकिन वे हर समय दुखी नहीं रहते थे. सार्वजनिक छुट्टियों पर, उन्हें नाचने की अनुमति थी.

वे बैंजो, वायलिन और घर के बने वाद्ययंत्र बजाते थे, और साथ में नाचते और गाते थे. गुलाम खेतों में काम करते हुए भी गाते थे, और वे अपने जीवन के सभी कष्टों को दिल को छू लेने वाली, ऊंची धुनों में पिरोते थे.

"मैं सितारों और चाँद को उगते हुए देखता हूँ,
मैं अपनी कब्र में लेटकर अपनी बाँहें फैलाऊँगा,
और मेरी आत्मा और तुम्हारी आत्मा उस दिन मिलेंगी,
जब मैं अपना शरीर नीचे रखूँगा."

गुलामों का एक समूह एक आदमी को गाते और बैंजो बजाते हुए सुनता है.

बागानों के कई गुलाम धार्मिक गीत गाते थे. लेकिन ये गीत अक्सर गुप्त अर्थों से भरे होते थे. एक प्रसिद्ध गुलाम गीत के शब्द थे:

"मेरे पीछे स्वर्गदूतों का हाथ आ रहा है,

वो मुझे घर ले जाने के लिए आ रहा है."

बागान मालिकों को लग रहा था कि गुलाम स्वर्ग के बारे में गा रहे थे, लेकिन वे गुप्त रूप से उस बारे में गा रहे थे जिसकी उन्हें धरती पर उम्मीद थी - कोई ऐसा व्यक्ति जो उन्हें भागने में मदद करे.

कुछ गुलामों को अपने मालिकों से अपनी आज़ादी खरीदने का मौका मिला. कैरिबियन में एक जहाज पर काम करने वाले ओलाउदा इक्वियानो नामक एक व्यक्ति से, उसके मालिक ने चालीस पाउंड के बदले में आज़ादी देने का वादा किया. ओलाउदा ने एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक माल का व्यापार करके पैसा कमाया. एक साल की कड़ी मेहनत के बाद, उसने पैसे जुटाए और उन्हें अपने मालिक रॉबर्ट किंग को दे दिए.

"अगर मुझे लगता कि तुम्हें पैसे इतनी जल्दी मिल जाएंगे, तो मैं कभी चालीस पाउंड नहीं कहता," रॉबर्ट ने गुस्से से कहा. लेकिन जहाज़ का कप्तान उससे नाराज़ हुआ. "तुम्हें कभी अपना वादा नहीं तोड़ना चाहिए," उसने गुस्से में कहा. आखिरकार, रॉबर्ट ने हार मान ली.

जैसे ही ओलाउदा जहाज से उतरा, उसे यकीन हुआ कि धरती पर उससे ज़्यादा खुश और कोई नहीं था. "अब मैं आज़ाद हूँ!" उसने हर किसी से चिल्लाकर कहा. "यह मेरे जीवन का सबसे अच्छा दिन है!" वह सड़कों पर बिजली की तरह भागा, उसके पैर मुश्किल से ज़मीन को छू रहे थे.

बहुत से गुलाम अपने लिए कुछ पैसे कमा पाते थे, लेकिन बहुत कम लोग ही अपनी आज़ादी खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे जुटा पाते थे, जैसा कि ओलाउदा ने किया था. इसलिए, उनके पास भागने के अलावा और कोई चारा नहीं था.

यह हथकड़ी गुलामों द्वारा यात्रा के दौरान पहनी जाती थी, ताकि वे भाग न सकें.

अध्याय 6

महान पलायन

निडर और आविष्कारशील, कई गुलामों ने अपने स्वामियों से बचने और अपने प्रियजनों को खोजने के आश्चर्यजनक तरीके सोचे. उन्होंने भेष बदलकर, जहाजों पर छिपकर, और ट्रेन की छतों पर सैकड़ों मील की दूरी तय करके अपनी जान बचाने की कोशिश की.

भागने की कुछ सबसे शानदार कहानियाँ संयुक्त राज्य अमेरिका से आती हैं. 19वीं शताब्दी तक, उत्तरी राज्यों में से कई में दासता समाप्त हो गई थी; लेकिन दक्षिणी राज्यों में अभी भी मौजूद थी. इसलिए, कई दासों ने उत्तर की ओर भागने की कोशिश की, भले ही दास पकड़ने वाले सड़कों पर घूम रहे थे, और बागान मालिकों ने उनके पीछे क्रूर कुत्तों के झुंड भेजे थे.

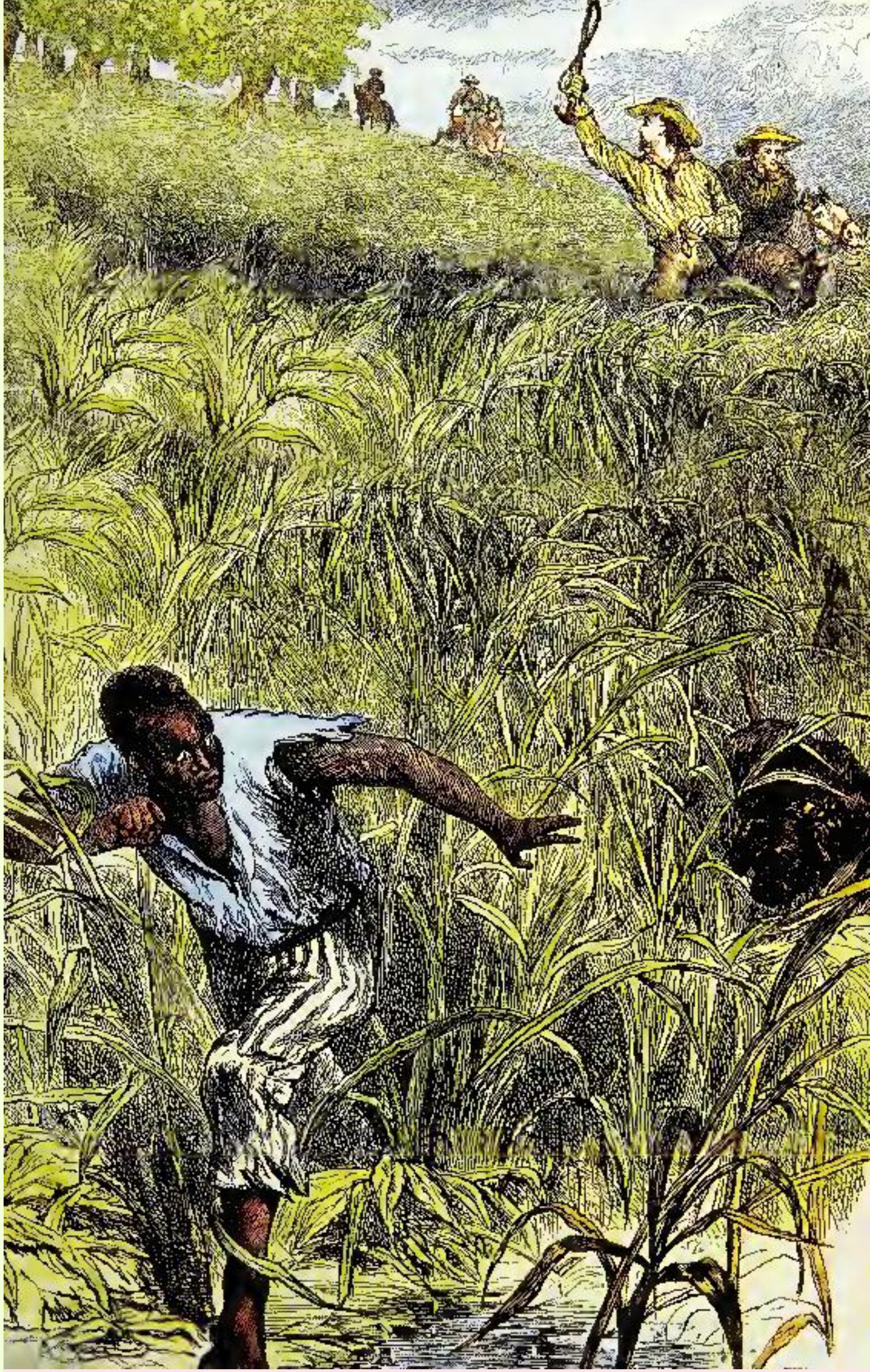

इस एनग्रेविंग में, एक दास पकड़ने वाला कुत्तों के झुंड के साथ भागने वाले गुलाम का पीछा करता है.

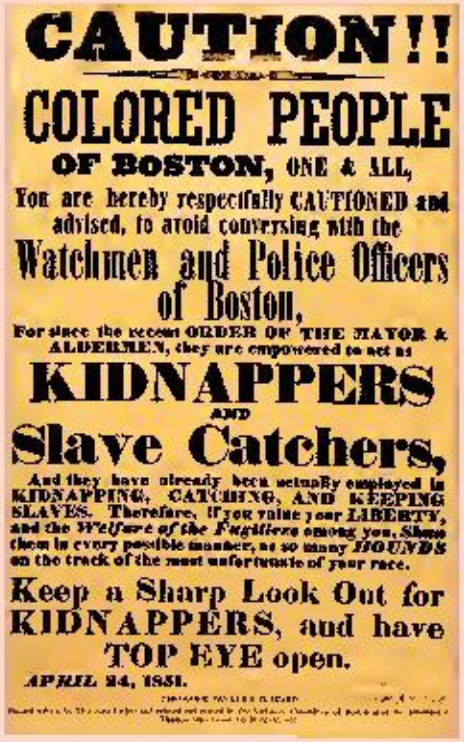

यह पोस्टर बोस्टन में अश्वेत लोगों को अपहरणकर्ताओं और दास पकड़ने वालों से सावधान रहने की चेतावनी देता है.

भागने वालों में से हेनरी ब्राउन नाम का एक साहसी व्यक्ति था. जब वह एक सुबह खेतों में काम कर रहा था, तो उसे बताया गया कि उसकी पत्नी और बेटे को एक नए मालिक को बेच दिया गया है.

उस रात, हेनरी रोया. उसके मालिक ने वादा किया था कि वह हेनरी के परिवार को कभी नहीं तोड़ेगा. लेकिन हेनरी जानता था कि अगर वह बागान में रहा, तो वह अपने परिवार को फिर कभी नहीं देख पाएगा. इसलिए, उसने भागने का फैसला किया.

उसने जेम्स मैककिम नामक एक प्रसिद्ध गुलामी विरोधी प्रचारक के बारे में सुना था, जो उत्तर में फिलाडेल्फिया में रहता था.

अगर वह मैककिम तक पहुँच पाता, तो उसे पता था कि वह उसकी जरूर मदद करेगा. यह एक असंभव काम लग रहा था. लेकिन फिर उसके दिमाग में एक शानदार विचार कौंधा.

एक दोस्त की मदद से, हेनरी ने खुद को एक बड़े लकड़ी के बक्से के अंदर छिपा लिया. उसने मैककिम को पहले ही एक संदेश भेज दिया, और फिर खुद को फिलाडेल्फिया में मैककिम के घर भेज दिया.

तीन दिनों तक, हेनरी पूरी तरह से अंधेरे में लेटा रहा, इस डर से कि किसी भी पल बक्सा टूट जाएगा, और उसे खोज लिया जाएगा. उसने बक्से पर लिखा था, "इस तरफ सावधानी से रखें", लेकिन उस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया. इसलिए, उसने अपने सिर ले बल कई मील की दूरी तय करनी पड़ी.

अंत में, बक्सा जेम्स मैककिम के घर पहुँचा, जहाँ लोगों का एक समूह उत्सुकता से इंतज़ार कर रहा था.

"क्या अंदर सब ठीक है?" जेम्स ने बक्से के ढक्कन पर ज़ोर से थपथपाते हुए चिल्लाया. तब एक मौत जैसी खामोशी छा गई.

फिर, अंदर से, एक कांपती हुई आवाज़ आई. "हाँ, हाँ, मैं ठीक-ठाक हूँ," हेनरी ने फुसफुसाते हुए कहा. जल्दी से, लोगों ने बॉक्स खोला, ताली बजाते हुए हेनरी लड़खड़ाते हुए बाहर निकला - और बेहोश होकर फर्श पर गिर पड़ा.

भागने के बाद, हेनरी को "हेनरी बॉक्स ब्राउन" के नाम से जाना जाने लगा.

हेनरी को कभी अपना परिवार नहीं मिला, लेकिन उसने अपना बाकी जीवन भगोड़ों की मदद करते हुए बिताया. उसने जेम्स मैककिम के साथ अंडरग्राउंड रेलरोड पर काम किया, जो एक गुप्त नेटवर्क था जो गुलामों को उत्तर के मुक्त राज्यों में भागने में मदद करता था.

रेलरोड घरों से बना था, जिन्हें स्टेशन कहा जाता था. स्टेशन मास्टरों द्वारा चलाया जाता था, जो भागते हुए गुलामों को भोजन और आश्रय प्रदान करते थे. इसे 1787 में एक क्वेकर, आइजैक हॉपर द्वारा शुरू किया गया था. क्वेकर कट्टरपंथी ईसाइयों का एक समूह था, जो गुलामी को गलत मानते थे.

भागे हुए गुलामों को रात के लिए बिस्तर देने के बाद, स्टेशन मास्टर उन्हें वैगनों के पीछे बांध देते थे, ताकि उन्हें मार्ग पर अगले स्टेशन तक ले जाया जा सके. ज़्यादातर गुलाम कपड़ों के ढेर के नीचे छिप जाते थे, लेकिन कुछ गाड़ियों में उनके छिपने के लिए गुप्त डिब्बे होते थे. जब गाड़ियों की तलाशी ली जाती, तो भागने वाले लोग बिल्कुल शांत पड़े रहते, उन्हें डर था कि कहीं एक भी खांसी या छींक उन्हें पकड़ न ले. लेकिन कई लोग भाग्यशाली थे. 1850 तक, 10,000 से ज़्यादा गुलामों ने भागने के लिए भूमिगत रेलमार्ग का इस्तेमाल किया था.

1851 में, मैरीलैंड की एक युवा महिला गुलाम, जिसका नाम हैरियट टबमैन था, ने भूमिगत रेलमार्ग के बारे में सुना और भागने की कोशिश करने का फैसला किया. आधी रात को, वह और उसके भाई अपने क्वार्टर से बाहर निकले.

लेकिन, कुछ ही समय में, हैरियट के भाइयों ने उससे वापस लौटने की विनती की. वे पकड़े जाने से बुरी तरह डरे हुए थे. हैरियट ने उन्हें कसकर गले लगाया, और दुखी होकर उन्हें तब तक दूर जाते देखा जब तक वे नज़रों से ओझल नहीं हो गए.

अब वह बिलकुल अकेली थी, "मेरे पास करने के लिए केवल दो ही चीजें हैं," उसने खुद से कहा, "मुक्ति, या मृत्यु. अगर मुझे एक नहीं मिल सकती, तो मैं दूसरी ज़रूर लूँगी. लेकिन जब तक मुझमें ताकत है, मैं स्वतंत्रता के लिए लड़ूँगी." उत्तर की ओर अपनी लंबी यात्रा पर, हैरियट तारों के नीचे सोती थी, और जो कुछ भी मिलता था, वो खाती थी. लेकिन कभी-कभी, आधी रात को, वह एक घर में आ जाती थी जिसकी खिड़की में एक मोमबत्ती चमक रही होती थी. तब उसे पता चलता था कि वह घर भूमिगत रेलमार्ग पर एक स्टेशन था, और वहाँ उसका स्वागत किया जाएगा.

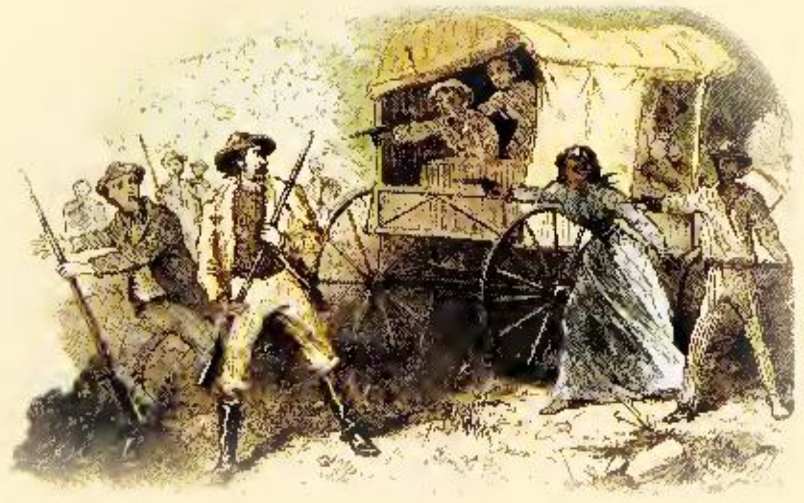

1872 में बनाई गई यह नक्काशी, उस लड़ाई को दिखाती है, जब गुलाम पकड़ने वाले एक वैगन के अंदर भागे हुए गुलामों को खोजते हैं.

हेरिएट अंततः उत्तर में पहुँच गई, लेकिन बहुत जल्द ही उसने दक्षिण में वापस जाने के लिए पर्याप्त धन जुटा लिया, ताकि वो अन्य दासों को बचा सके. वह गुप्त रूप से बागानों में जाती थी, चुने हुए छिपने के स्थानों पर एकत्रित काँपते हुए लोगों के समूहों से मिलने के लिए, जो गुप्त रूप से उसके द्वारा आज़ादी दिलाने का इंतज़ार कर रहे थे.

हेरिएट ने भूमिगत रेलमार्ग पर 19 यात्राएँ कीं, और 300 से अधिक लोगों की भागने में मदद की. वह रॉकी पर्वतों, बर्फीली धाराओं और घने जंगलों से होते हुए भागने वालों का नेतृत्व करती थी. कभी-कभी, पैरों से खून बहने के साथ, थके हुए दास हार मानने को तैयार हो जाते थे.

एक यात्रा के दौरान, एक बूढ़ा और भयभीत दास उसके सामने घुटने टेककर, बागान में वापस जाने की विनती करने लगा. फिर हेरिएट ने अपनी बंदूक निकाली, उसे उसके सिर पर तानी और उस पर चिल्लाई: "मृत लोग कोई कहानी नहीं बताते - आगे बढ़ो या मरो!"

हेरिएट जल्द ही इतनी प्रसिद्ध हो गई; दास मालिकों ने उसे पकड़ने के लिए इनाम की पेशकश की. वह हमेशा गिरफ़्तार होने के खतरे में रहती थी. एक दिन, वह अपने ही 'वांटेड' पोस्टर के नीचे रेलवे स्टेशन पर सो गई. जब वह जागी, तो दो आदमी पोस्टर को जोर से पढ़ रहे थे, "वांटेड: हेरिएट टबमैन, अनपढ़, खतरनाक भागोड़ी गुलाम." इनाम: $40,000."

अपनी राइफल के साथ हैरियट टबमैन

सबसे बाईं ओर हैरियट टबमैन, पूर्व गुलामों के एक समूह के साथ जिन्हें उसने मुक्त कराने में मदद की थी.

"यह वही है!" एक आदमी सीधे हैरियट की ओर देखते हुए चिल्लाया. लेकिन हैरियट ने शांति से फर्श पर पड़ी एक किताब उठाई और उसने पढ़ने का नाटक किया. उन्हें बेवकूफ बनाने के लिए यह काफी था. फिर दोनों आदमी चले गए.

कई लोगों ने गुलामों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली, गुलाम मालिक भागने वालों और उनकी मदद करने वाले सभी लोगों से नफरत करते थे. लेकिन एक चीज थी जो उन्हें किसी भी चीज से ज्यादा डराती थी; गुलाम विद्रोह.

18वीं सदी की एक पेंटिंग जिसमें जमैका के गुलाम नेता लियोनार्ड पार्किंसन को दिखाया गया है, जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी.

अध्याय 7

विद्रोह!

पूरे इतिहास में, सैकड़ों साहसी गुलामों ने अपने मालिकों के खिलाफ लड़ाई लड़ी. इनमें सबसे प्रसिद्ध में स्पार्टाकस नाम का एक रोमन गुलाम था, जिसने 2,000 साल पहले रोमन सेना के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया था. तीन साल तक, उसने एक के बाद एक युद्ध जीते, जब तक कि क्रैसस नामक एक रोमन जनरल ने उसे हरा नहीं दिया, स्पार्टाकस युद्ध में मारा गया, और उसके 6,000 अनुयायियों को सूली पर चढ़ा दिया गया.

लेकिन सभी गुलाम विद्रोह त्रासदी में समाप्त नहीं हुए. 1789 में, हैती का कैरिबियन द्वीप एक फ्रांसीसी बस्ती थी, जहाँ हज़ारों लोग गन्ने के बागानों में गुलामी करते थे.

गुलामों में से एक शांत, एकाकी व्यक्ति था जिसका नाम टूसेंट लोओवरचर था. उसका मालिक - बहुत ही उदार था: उसने टूसेंट को कभी नहीं मारा और उसे पढ़ना और लिखना सीखने दिया. एक किताब में एक अंश था जिसे टूसेंट ने बार-बार पढ़ा.

> हर किसी को स्वतंत्रता का अधिकार है.
> गुलामों को उनकी स्वतंत्रता दिलाने के लिए
> एक साहसी सरदार की आवश्यकता है.
> वैसा साहसी आदमी कहाँ है? वह प्रकट होगा,
> और हर कोई उसकी प्रशंसा करेगा.

जब उसने ये शब्द पढ़े, तो टूसेंट को कोई संदेह नहीं था कि वो वैसा ही नेता बनेगा.

टूसेंट लोओवरचर, 19वीं सदी के प्रिंट से

यह किताब एब्बे रेनल नामक एक फ्रांसीसी व्यक्ति द्वारा लिखी गई थी, जो मानते थे कि सभी को स्वतंत्र होने का अधिकार था. वह विद्रोही विचारकों के एक समूह के थे, जिनके समानता के विचार पूरे फ्रांस में फैल रहे थे.

1789 में विद्रोहियों ने विद्रोह का नेतृत्व किया और क्रांति ने पेरिस को जकड़ लिया. राजा को मार डाला गया और फ्रांस एक गणराज्य बन गया. क्रांतिकारियों ने हैती में दासों को विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया. चार वर्षों के भीतर, टूसेंट ने द्वीप पर शासन किया और दासता पर प्रतिबंध लगा दिया गया.

फिर, एक नए फ्रांसीसी नेता, नेपोलियन ने दासता को वापस लाने के लिए हैती पर आक्रमण करने की कोशिश की. हालाँकि नेपोलियन उस समय का सबसे महान सेनापति था, लेकिन टूसेंट की सेना उसके खिलाफ़ डटी रही. लेकिन जब टूसेंट ने शांति स्थापित करने के लिए नेपोलियन से मुलाकात की, तो उसे धोखा दिया गया और जंजीरों में जकड़ कर वापस फ्रांस ले जाया गया.

सिर्फ़ दो साल बाद, नेपोलियन की हार हुई और हैती आज़ाद हो गया. इस जीत ने गुलाम बस्तियों में उत्साह की लहरें पैदा कर दीं - और पूरे यूरोप में डर की लहरें फैल गईं.

18वीं सदी में हैती में दंगे भड़के और इस प्रिंट में दास मालिकों को भागते हुए दिखाया गया है.

कार्टूनिस्ट जेम्स गिल्रे द्वारा बनाया गया यह प्रिंट 18वीं सदी के इंग्लैंड में आलीशान जीवनशैली के विचित्र पक्षों को दर्शाता है.

अध्याय 8

जंजीरों को तोड़ना

18वीं सदी में, लंदन एक व्यस्त, समृद्ध शहर था. वहाँ की बेकरियों में स्पंज से लेकर जिंजरब्रेड तक बीस अलग-अलग तरह के केक भरे होते थे. पूरे दिन और आधी रात तक चहल-पहल वाले कॉफ़ी हाउस खुले रहते थे और लोग तम्बाकू पीते और सूंघते थे. पूरा देश चॉकलेट का दीवाना था और एक मीठी चाय की प्याली जल्दी ही राष्ट्रीय लत बन गई.

इन सभी वस्तुओं में अदृश्य तत्व का कोई ज़िक्र नहीं करता: गुलामी. गुलामों का व्यापार लंदन की दौलत का केंद्र था और कई सालों तक चर्च ऑफ़ इंग्लैंड और शाही परिवार भी इसमें शामिल रहे थे. ड्यूक ऑफ़ यॉर्क, जो बाद में किंग जेम्स II बने, ने अपने स्वामित्व वाले 3,000 अफ़्रीकी गुलामों को उनके नाम में अपने नाम का पहले अक्षर लिखने का आदेश दिया.

गुलामों का व्यापार एक सम्मानजनक पेशा बन गया था. लेकिन 1760 के दशक तक, बहुत से लोग हिंसक गुलाम स्वामियों की कहानियों से भयभीत हो रहे थे.

कई कलाकारों ने लोगों को यह दिखाने के लिए इस तरह की तस्वीरें बनाईं कि गुलामों को दी जाने वाली सज़ाएँ बहुत क्रूर थीं.

1765 की एक ठंडी और बरसाती रात में, जोनाथन स्ट्रॉन्ग नाम का एक युवक लंदन के मिंसिंग लेन में एक घर में लड़खड़ाता हुआ घुसा, वहाँ रहने वाले डॉक्टर को ढूँढ़ते हुए. वह खून से लथपथ था, और उसे मुश्किल से दिखाई दे रहा था. डॉक्टर, विलियम शार्प और उसके भाई ग्रैनविले उस आदमी को अस्पताल ले गए, जहाँ उसने उन्हें अपनी कहानी सुनाई. जोनाथन स्ट्रॉन्ग एक गुलाम था, और उसके मालिक ने उस पर पिस्तौल से हमला किया था.

ग्रानविले ने अगले कुछ महीनों में जोनाथन से मुलाकात की. जब वह ठीक हो गया, तो उन्होंने उसे अलविदा कहा.

दो साल बाद, उसे एक पत्र मिला.

ग्रानविले शार्प
जोनाथन स्ट्रॉन्ग
के साथ

प्रिय ग्रैनविले,

मेरे पुराने मालिक ने मुझे ढूँढ़ लिया और मेरा अपहरण कर लिया है. उसने मुझे जेल में बंद कर दिया है, और अब वह मुझे जमैका भेजने वाला है.

कृपया मेरी मदद करें,

जोनाथन स्ट्रॉन्ग

ग्रैनविले जेल पहुंचे और वार्डन से जोनाथन को रिहा करने की विनती की. वार्डन ने मना कर दिया. जल्द ही मामला अदालत में पहुंचा, ग्रैनविले को कानून के बारे में कुछ भी नहीं पता था, लेकिन उसने कड़ी मेहनत की और जोनाथन की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी.

जून की एक सुबह, जज ने सजा पढ़ी, "तुम जाने के लिए स्वतंत्र हो." जोनाथन स्तब्ध होकर चुपचाप बैठा रहा, उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला.

ग्रैनविले जल्द ही गुलामों के दोस्त के रूप में जाने जाने लगे. उन्होंने खुद को उन्मूलनवादी कहने वाले एक समूह का नेतृत्व किया, जिन्होंने गुलामों के व्यापार को समाप्त करने के लिए अभियान चलाया.

इग्नाटियस सांचो का चित्र उस समय के प्रसिद्ध कलाकार थॉमस गेन्सबोरो ने बनाया था.

एक और प्रसिद्ध उन्मूलनवादी - इग्नाटियस सांचो नाम का एक व्यक्ति था. वह एक गुलाम जहाज पर पैदा हुआ था, और एक बाल दास के रूप में लंदन लाया गया था. अपनी स्वतंत्रता खरीदने के बाद, वह वेस्टमिंस्टर में रहता था, जहाँ वह संगीत रचता था, और एक किराने की दुकान चलाता था. सांचो ने अपने दोस्तों को सैकड़ों पत्र लिखे, उनसे दास व्यापार को रोकने के लिए हर संभव प्रयास करने की विनती की.

जब 1780 में सांचो की मृत्यु हुई, तो उसके पत्र प्रकाशित हुए, और रातों-रात सनसनी बन गए. गुलाम मालिकों को यह दावा करना पसंद था कि अफ़्रीकी असभ्य और मूर्ख हैं, इसलिए उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार करना उचित है. लेकिन सांचो के पत्रों से पता चलता है कि वह मजाकिया, बुद्धिमान और दयालु था.

फिर, 1789 में, ओलाउदा इक्वियानो नामक एक मुक्त दास ने अपने जीवन की कहानी प्रकाशित की. अपनी स्वतंत्रता जीतने के बाद, वह आर्कटिक में पहला अफ़्रीकी खोजकर्ता बना. हज़ारों लोग एक गुलाम के रूप में उसके जीवन की कहानी और एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में उसके कारनामों वाली किताब खरीदने के लिए दौड़ पड़े.

ब्रिटेन में कई लोगों के लिए यह स्पष्ट हो रहा था कि दुनिया में ऐसे लोग भी थे जो क्रूर, निर्दयी और असभ्य थे. लेकिन वे अफ़्रीकी नहीं थे. वे गोरे लोग थे जिन्होंने उन्हें गुलाम बनाया था.

यह ओलाउदा इक्वियानो की बेस्टसेलिंग पुस्तक का पहला पृष्ठ है, जिसने लोगों को यह समझाने में मदद की कि दास व्यापार को समाप्त कर दिया जाना चाहिए.

एक रात, ओलाउदाह एक चौंकाने वाले नए मामले की खबर लेकर ग्रैनविले शार्प के पास गया. एक गुलाम कप्तान, ल्यूक कॉलिंगवुड, ज़ोंग जहाज पर था, जो जमैका के गुलामों को ले जाने वाला एक जहाज था. यात्रा के दौरान, कई गुलाम बीमार हो गए थे. कॉलिंगवुड जानता था कि अगर वे यात्रा के दौरान मर गए, तो कॉलिंगवुड के मालिक अपना सारा पैसा खो देंगे.

इसलिए, उसने 130 गुलामों को अटलांटिक महासागर में फेंक कर मार डाला. उसे उम्मीद थी कि ज़ोंग के मालिक प्रत्येक मृत व्यक्ति की बीमा राशि का दावा करने में सक्षम हो सकेगा.

जल्द ही मामला कानूनी अदालतों में समाप्त हो गया. ज़ोंग के वकील ने भीड़ को संबोधित करने के लिए उठते ही ग्रैनविले को भयभीत देखा.

1822 में बनाई गई यह नक्काशी में एक कप्तान गुलामों को पानी में फेंकते हुए दिखाया गया है.

"हत्या की यह सारी बातें बकवास हैं," उसने शांति से घोषणा की, "यह केवल सामान यानि पैसों का मामला है,"

यह चौंकाने वाला लग सकता था, लेकिन यह सच था. अंग्रेजी कानून में, दासों को मनुष्य के रूप में कभी माना ही नहीं गया था.

इस मामले ने उन्मूलनवादियों को कार्रवाई के लिए प्रेरित किया. 1787 में, ग्रैनविले और उनके मित्र थॉमस क्लार्कसन ने दास व्यापार के उन्मूलन के लिए एक सोसायटी की स्थापना की. उन्होंने समाचार पत्रों में लेख प्रकाशित किए, और लोगों को यह समझाने के लिए सबूत इकट्ठा किए कि दास व्यापार वास्तव में कितना क्रूर था.

उन्मूलनवादियों को भयंकर विरोध का सामना करना पड़ा, क्योंकि कई लोगों का मानना था कि ब्रिटेन की संपत्ति दास व्यापार पर निर्भर थी. लेकिन एक प्रसिद्ध दार्शनिक, एडम स्मिथ ने इसके विपरीत दावा किया - कि दास व्यापार को समाप्त करने से वास्तव में अधिक धन पैदा होगा. जैसे-जैसे उनके विचार फैले, अधिक से अधिक लोगों ने यह स्वीकार किया कि गुलाम व्यापार को समाप्त करने का समय आ गया था.

जबकि ग्रैनविले शार्प अदालत में दासों का बचाव कर रहे थे, और थॉमस क्लार्कसन सबूतों की तलाश कर रहे थे, तब एक राजनेता, विलियम विल्बरफोर्स, संसद में लड़ रहे थे.

1789 में, उन्होंने हाउस ऑफ कॉमन्स में दासता पर अपना पहला भाषण दिया. उन्होंने दास व्यापार की भयावहता पर तीन घंटे तक भाषण दिया, और संसद में सनसनी मचा दी.

विलियम विल्बरफोर्स के नाटकीय भाषणों ने उन्हें "कॉमन्स की कोकिला" की उपाधि दिलाई.

अंत में, उनकी आवाज़ पूरे कमरे में गूंज उठी. "यह सब सुनने के बाद, आप दूसरी तरफ़ मुड़ सकते हैं, लेकिन आप फिर कभी यह नहीं कह सकते हैं, कि आपको पता नहीं था."

विल्बरफोर्स के भाषण प्रभावशाली थे, लेकिन संसद में दास मालिक बहुत शक्तिशाली थे. अगले नौ वर्षों तक हर साल, विल्बरफोर्स ने दास व्यापार के खिलाफ़ एक नया विधेयक पेश किया. लेकिन हर बार विधेयक पराजित हुआ.

अंत में, 23 फरवरी, 1807 को, दास व्यापार को समाप्त करने के लिए विल्बरफोर्स के नवीनतम प्रस्ताव पर हाउस ऑफ़ कॉमन्स में बहस हुई. एक-एक करके, राजनेता उठे और बोले, प्रत्येक ने उन्मूलन का समर्थन किया. विल्बरफोर्स ने अपना सिर अपने हाथों में रखा और खुशी से रो पड़े. तीस से अधिक वर्षों तक, हज़ारों लोगों ने दास व्यापार को समाप्त करने के लिए अभियान चलाया था. अंत में, वे जीतने जा रहे थे.

वोट 283 से 16 के अंतर से पारित हुआ, और ब्रिटिश दास व्यापार को समाप्त कर दिया गया. अब ब्रिटिश जहाजों को अटलांटिक के पार दासों को ले जाने की अनुमति नहीं थी. हर जगह बागानों में जश्न मनाया गया. लेकिन उन्मूलनवादियों को जल्द ही एहसास हो गया कि व्यापार को रोकना पर्याप्त नहीं था. लोग अब दासों को खरीद या बेच नहीं सकते थे, लेकिन वे अभी भी उनके मालिक हो सकते थे. उन्मूलनवादियों को अब खुद दासता को खत्म करना था.

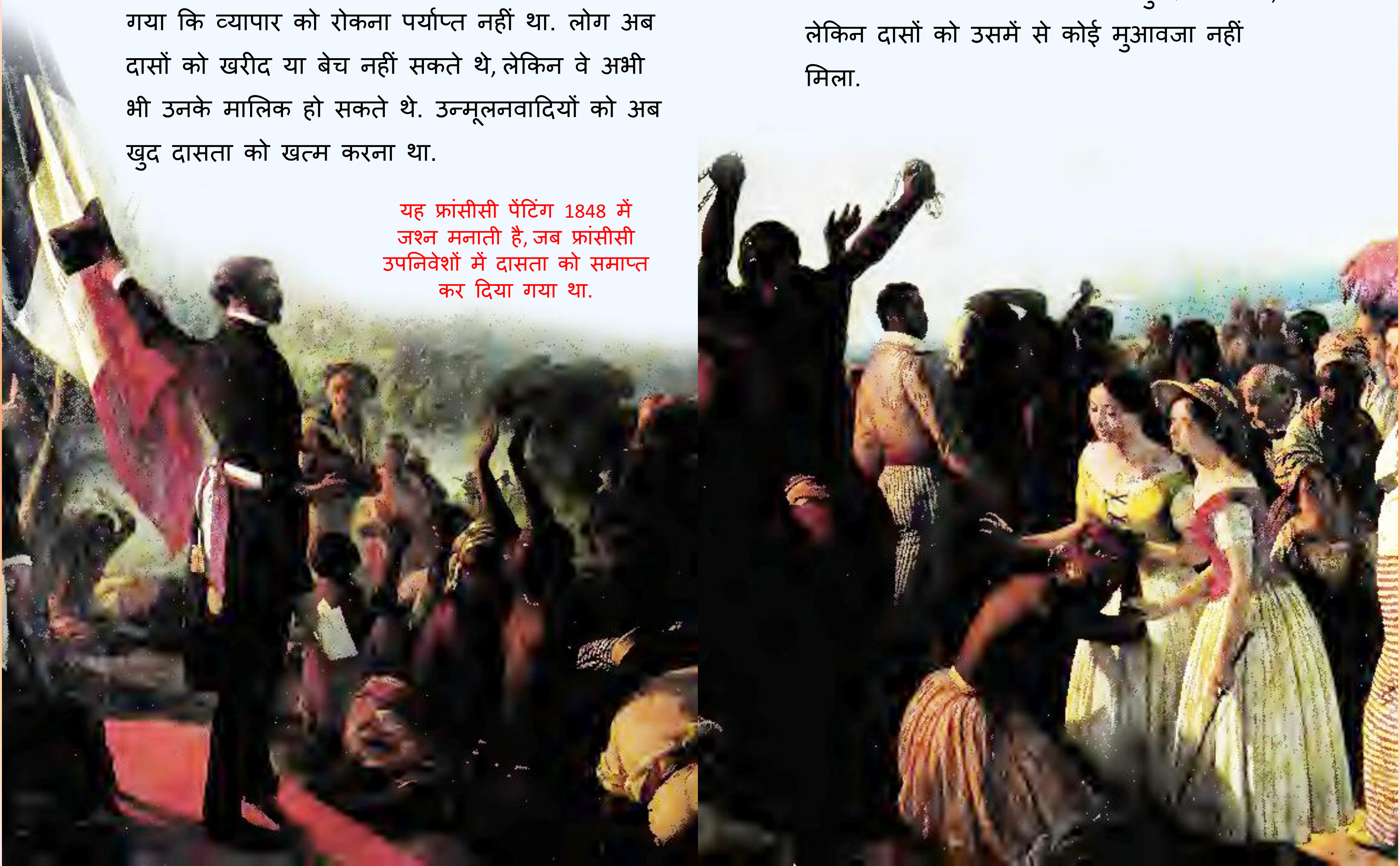

यह फ्रांसीसी पेंटिंग 1848 में जश्न मनाती है, जब फ्रांसीसी उपनिवेशों में दासता को समाप्त कर दिया गया था.

इसलिए, बीस वर्षों तक, उन्होंने अथक अभियान चलाया. 1833 में, पूरे ब्रिटिश साम्राज्य में दासता को समाप्त कर दिया गया.

ब्रिटिश सरकार ने बागान मालिकों को मुआवजे के रूप में 20 मिलियन पाउंड का भुगतान किया, लेकिन दासों को उसमें से कोई मुआवजा नहीं मिला.

अध्याय 9

युद्ध में दास

इस बीच, संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण में, दासता अभी भी फल-फूल रही थी. 1850 के दशक के दौरान, फ्रेडरिक डगलस जैसे भगोड़ों ने दासों को विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया. "आपने देखा है कि कैसे एक आदमी, गुलाम बनता है," उन्होंने लिखा, "अब आप देखेंगे कि कैसे एक गुलाम, आदमी बनता है." सोजर्नर ट्रुथ एक और बच निकलने वाली महिला गुलाम थीं. उन्होंने गुलामी के खिलाफ जोशीले भाषण दिए.

उनके एक भाषण के बाद, एक आदमी तिरस्कार के साथ उनकी ओर मुड़ा, "मिस ट्रुथ, आपका भाषण एक पिस्सू के काटने से ज़्यादा कुछ नहीं हैं," उसने कहा, "शायद नहीं, लेकिन भगवान की इच्छा से, मैं आपको हमेशा काटती रहूँगी," उन्होंने झट से जवाब दिया.

फिर भी, चाहे अभियानकर्ता कितनी भी मेहनत क्यों न करें, दक्षिणी राज्यों ने हठपूर्वक गुलामी का बचाव किया. यह उत्तर और दक्षिण को विभाजित करने वाले कई मुद्दों में से एक था, जल्द ही, तनाव उबलने के बिंदु पर पहुँच गया, और 1861 में वे एक खूनी गृहयुद्ध में बदल गए.

अमेरिकी गृहयुद्ध के एक दृश्य का यह पुनः अभिनय दिखाता है कि युद्ध का मैदान कैसा दिखता होगा.

दो साल की लड़ाई के बाद, उत्तरी राज्यों के नेता अब्राहम लिंकन ने दक्षिण को हराने और गुलामी को हमेशा के लिए खत्म करने के लिए अश्वेत लोगों को अपनी सेना में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया. उत्तरी पक्ष में 190,000 से अधिक अश्वेत सैनिकों ने लड़ाई लड़ी.

1865 में, दक्षिण पराजित हुआ और अंततः पूरे संयुक्त राज्य अमेरिका में गुलामी समाप्त हो गई. दो सौ वर्षों तक, गुलामों ने एक ही सपना देखा था - स्वतंत्रता. आखिरकार, वे स्वतंत्र हो गए. बागानों में, गुलाम अचंभित थे. एक ही दिन में उनका जीवन हमेशा के लिए बदल गया था.

यह तस्वीर एक भाई और बहन को दिखाती है, जो पूर्व गुलाम थे जिन्हें अमेरिकी गृहयुद्ध में एक सैनिक ने दक्षिण से बचाया था.

इन पूर्व गुलामों को 1890 में ब्रिटिश नौसेना द्वारा एक गुलाम जहाज से बचाया गया था.

अध्याय 10

गुलामी का अंत?

1900 तक, दास व्यापार अब आधिकारिक रूप से अस्तित्व में नहीं था, लेकिन दुनिया के कई हिस्सों में यह अवैध रूप से जारी रही. दास व्यापारी अभी भी सहारा रेगिस्तान के पार मध्य पूर्व के दास बाज़ारों तक पुराने मार्गों का उपयोग कर रहे थे. वहाँ से दासों को बेचा जाता था और कुछ को भारत तक ले जाया जाता था.

20वीं सदी के दौरान, कई देशों ने दास प्रथा को समाप्त करने के लिए मिलकर काम किया. लेकिन वे सफल नहीं हुए.

1980 के दशक में कोलंबिया की एक
खदान में काम कर रहा एक बच्चा दास

आज भी पूरी दुनिया में दास प्रथा जारी है. भारत और पाकिस्तान में, लाखों श्रमिकों को अपना कर्ज चुकाने के लिए पूरी ज़िंदगी काम करने के लिए मजबूर किया जाता है. पूर्वी यूरोप में, दास गिरोह महिलाओं को यूनाइटेड किंगडम जैसे अमीर देशों में आने के लिए धोखा देते हैं. जब वे वहाँ पहुँचते हैं, तो गिरोह उन्हें बंद कर देते हैं और उनसे बिना पैसे दिए काम करवाते हैं.

पश्चिमी अफ्रीका के माली में सिकासो नामक एक छोटे से शहर में, पुलिस ने सैकड़ों लापता बच्चों के रिकॉर्ड दर्ज किए हैं. दास व्यापारी उन्हें अगवा कर लेते हैं और उन्हें पास के आइवरी कोस्ट के चॉकलेट बागानों में काम करने के लिए मजबूर करते हैं.

ये आधुनिक दासता के कई उदाहरणों में से कुछ हैं. आज दुनिया में 12.5 मिलियन से ज़्यादा गुलाम हैं और गुलाम व्यापारी आज भी इंसानों की दुर्दशा से बहुत ज़्यादा दौलत कमाते हैं. आजकल इस व्यापार को मानव तस्करी के नाम से जाना जाता है और हर साल इसकी कीमत हज़ारों मिलियन डॉलर होती है.

लेकिन गुलामी को पहले से कहीं ज़्यादा विरोध का सामना करना पड़ रहा है. पूरी दुनिया में हज़ारों लोग इससे लड़ने के लिए काम कर रहे हैं.

पाकिस्तान में युवा
गुलामी के खिलाफ़
प्रदर्शन कर रहे हैं.

एक नागरिक अधिकार कार्यकर्ता, जॉन आइबनर, ने गुप्त रूप से सूडान की 20 यात्राएं की हैं, जहाँ 15,000 से ज़्यादा लोगों को गुलामी में धकेला गया है, जिनमें कई बच्चे भी शामिल हैं. आइबनर गुलामों को उनके मालिकों से खरीदते हैं और फिर बच्चों को उनके घर वापस लौटने में मदद करते हैं.

उनके जैसे और भी कई लोग हैं, जो अलग-अलग तरीकों से गुलामी से लड़ने के लिए पूरी दुनिया में काम कर रहे हैं. गुलामी खत्म नहीं हुई है, लेकिन पहले से कहीं ज़्यादा लोग इससे लड़ रहे हैं.

मुक्त होने के बाद
अपने वतन लौट रहे
भूतपूर्व गुलाम.

गुलामी का समयरेखा

1750 ई.पू. सबसे पहले कानून लिखे गए. इनमें दासों की सज़ा के नियम शामिल थे.

1000 ई.पू. चीन से लेकर मिस्र तक पूरी दुनिया में दास प्रथा मौजूद थी.

73 ई.पू. स्पार्टाकस ने रोमनों के खिलाफ़ दास विद्रोह का नेतृत्व किया.

800 इस समय के आसपास, पूर्वी अफ्रीकी दास व्यापार शुरू हुआ, जो अफ्रीका से दासों को, मध्य पूर्व में ले गया.

1502 पहले अफ्रीकी दासों को कैरिबियन ले जाया गया.

1787 लंदन में दास व्यापार उन्मूलन सोसायटी की स्थापना की गई.

1789 फ्रांसीसी क्रांति ने सभी के लिए "समानता और स्वतंत्रता" के आदर्शों की घोषणा की.

1791 दासों ने हैती में विद्रोह का नेतृत्व किया.

1804 हैती एक स्वतंत्र गणराज्य बन गया.

1807 ब्रिटेन में दास व्यापार को समाप्त कर दिया गया.

1833 ब्रिटिश उपनिवेशों में दासता को समाप्त कर दिया गया.

1841 ब्रिटेन. फ्रांस, रूस, प्रशिया और ऑस्ट्रिया समुद्र में दास व्यापार को रोकने के लिए सहमत हुए.

1865 संयुक्त राज्य अमेरिका में दास प्रथा समाप्त कर दी गई.

1873 पूर्वी अफ्रीका के सबसे व्यस्ततम बाजारों में से एक ज़ांज़ीबार में दास बाज़ार बंद कर दिया गया.

1888 ब्राज़ील में दास प्रथा समाप्त कर दी गई.

1936 उत्तरी नाइजीरिया में दास प्रथा को अवैध बना दिया गया.

1949 संयुक्त राष्ट्र ने मानव तस्करी के विरुद्ध एक सम्मेलन आयोजित किया.

2005 संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि हर साल 1.2 मिलियन बच्चों की तस्करी की जाती है.

गुलामी की कहानी

पूरे इतिहास में, दास रहे हैं - ऐसे लोग जो दूसरे लोगों के स्वामित्व में होते हैं, जिन्हें खरीदा और बेचा जा सकता है, और जो बिना आज़ादी के रहते हैं.
यह पुस्तक बाधाओं के बावजूद उनके धीरज और जीवित रहने की सम्मोहक कहानी बताती है.